मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

पाक्षिक

Email : mazdoormorcha@yahoo.co.in
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

- बेहतर सेवा की ओर ईएसआईसी के बढ़ते कदम
- 600 करोड़ रुपये के लिये स्मार्ट सिटी की जूत-पैजार — 3

- समाज की पशुवत प्रवृत्तियों का प्रतीक है मृत्युदंड। — 4

- बिहार विधानसभा : आसान नहीं भाजपा की राह
- अमितशाह भला कहां मुंह छिपाय! — 5

- उपायुक्त के संरक्षण में पार्किंग की लूट का धंधा
- सेक्टर 12 में बस अड्डे की जगह पार्किंग बनेगी — 8

वर्ष 28 अंक 20 फरीदाबाद, रविवार, 16-31 अगस्त 2015 फोन : - 9999595632 2 ₹

यूरोपीय नाज़ी आत्मदया से भरकर सोचते हैं, हम भी कितने बेचारे हैं ! दुनिया भर के ग़रीब.गुरबे हमारे यहां शांतिपूर्वक हमला कर रहे हैं ! कितना भी रोको पहुँच जाते हैं और हमारी पहचान को नष्ट कर रहे हैं। हमारी संस्कृति को नष्ट कर रहे हैं। हमारी जन्मदर लगातार घट रही है। श्वेत प्रजाति कुछ दिनों में नष्ट हो जायेगी इसके लिए हमारी सरकार और उसकी नीतियां ज़िम्मेदार है। किसी भी पार्टी में हिम्मत नहीं है कि इस सच्चाई पर कुछ बोले और कोई ठोस क़दम उठाये। इसीलिए हम मजबूर हो कर कुछ विदेशियों को मारते हैं तो क्या गलत करते हैं। इस्लामवादी आत्मदया से भरकर सोचते हैं , हम भी कितने बेचारे हैं ! जब भी गाज गिरती है तो हम मुस्लिमों पर ही। हम क्या थे क्या हो गए ! पूरी दुनिया में यहूदी और दूसरे राष्ट्र मिलकर इस्लाम को खत्म ही कर देना चाहते हैं। इसके लिए हमारी सरकार ज़िम्मेदार है। किसी भी पार्टी में हिम्मत नहीं है कि इस सच्चाई पर कुछ बोले और कोई ठोस क़दम उठाये। इसीलिए हम मजबूर हो कर कुछ विधर्मियों या अहमदियों या शियाओं को मारते हैं तो क्या गलत करते हैं।

हिन्दुत्ववादी आत्मदया से भर कर सोचते हैं, हम भी कितने बेचारे हैं ! पूरी दुनिया मिल कर हमारे खिलाफ षड्यंत्र कर रही है। चाहे वे इस्लामी मुल्क हों या ईसाई। सब मिल कर हम पर हमला कर रहे हैं और हम नहीं जगे तो कुछ दिनों में नष्ट हो जाएंगे। इसके लिए हमारी सरकार और उसकी नीतियां ज़िम्मेदार हैं। किसी भी पार्टी में हिम्मत नहीं है कि इस सच्चाई पर कुछ बोले और कोई ठोस क़दम उठाये। इसीलिए हम मजबूर हो कर कुछ दुश्मनों को मारते हैं तो क्या गलत करते हैं ।

नतीजा, हमको जिन सह.पीड़ितों के साथ मिलकर एकसाथ दुश्मनों से लड़ना चाहिए, हम आपस में ही लड़ बैठते हैं। हमारी सामुहिक हिंसाओं, आत्मदया और घृणा की जड़ें सामुहिक आत्म-घृणाओं और कुंठाओं में हैं, न कि हिन्दू या मुसलमान या यूरोपीय होने में । जब तक हम बहुसंख्यक श्रमजीवी एक नहीं हैं, तब तक एक दूसरे के साथ और हमारा खुद अपने साथ इंसान बनना मुमकिन नहीं है।

वोट जुटाऊ से वोट कटाऊ बन गए नरेंद्र मोदी साम्प्रदायिकता पड़ी भारी : विकास-कलई उतारी

प्रधान मंत्री मोदी के पन्द्रह अगस्त पर लाल किले से भाषण के ऐन पहले खुलासा हुआ भाजपा की सांप्रदायिक राजनीति के दो चेहरों का, 2007 में असीमानंद संघी.आतंकी गिरोह ने पानीपत का देशद्रोही समझौता बम काण्ड संपन्न किया था। उनकी 2010 से धर.पकड़ शुरु हुयी। अब 2015 में असीमानंद की जमानत और रिहायी का देशभक्त समझौता मोदी-राजनाथ सरकार के सौजन्य से अदालतों में संपन्न किया जा रहा है। 2012 में हिसार के भगाना गाँव के करीब ढाई सौ दलित परिवार जमीन से बेदखल किये जाने पर गाँव छोड़ने पर विवश हो गए थे इनमें से अनेकों बाद में दिल्ली जंतर.मंतर न्याय की आस लेकर बैठ गए।

मज़दूर मोर्चा, दिल्ली ब्यूरो

2014 में इसी गाँव की चार लड़कियों के साथ गैंग रेप हुआ। इसमें भी लीपा.पोतीनुमा ही चंद गिरफ्तारियों से अधिक कुछ न होता देख अब उस गाँव के सौ परिवार जंतर.मंतर पर डटे हैं। इनमें से पचास ने आठ अगस्त को विरोधस्वरूप इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। तिलमिलाए संघी और विहिप वाले प्रलोभन देकर उनकी घर वापसी अभियान में जुट गए हैं।

इन बेनकाब हुए चेहरों की राजनीति क्या है। अभी-अभी मुम्बई बम धमाकों में याकूब मेमन को फांसी देकर हटी मोदी सरकार बिहार चुनाव से पहले पूरी तरह सांप्रदायिक ध्रुवीकरण चाहती है। असीमानंद के आतंकी गिरोह को इसी लिए कानूनी शिकंजे से मुक्त कराया जा रहा है। भाजपाई.संघी गठबंधन, हिन्दुओं की बात तो करता है पर उसमें भी वह उच्च जातियों के वर्चस्व का प्रतिनिधि है। लिहाजा हुड्डा सरकार के समय उजड़े भगाना के दलितों के उत्पीड़न पर उनकी राज्य सरकार भी खामोश है। अन्यथा भाजपा के बड़े.बड़े दावों के हिसाब से तो इन्हें असीमानंद के लिए फांसी और भगाना के दलितों के लिए तुरंत पुनर्वास व पर्याप्त मुआवजे की व्यवस्था करनी चाहिए थी।

दरअसल भगाना के दलितों ने धर्मान्तरण का रास्ता अपनाकर संघ के घर वापसी अभियान को आईना ही दिखाया है। उन्हें उन्हीके हथियार से चोट पहुंचाई है। संघ की हरियाणा की भाजपा सरकार के लिए सन्देश साफ है कि या तो उत्पीड़ितों के साथ न्याय करो या खुद को हिन्दुओं का ठेकेदार बताना बंद करो। कुछ माह पहले उत्तर प्रदेश के रामपुर की दलित बस्ती के बाशिंदों ने भी इस अंदाज में वहां के आजम खान सरीखे शासकों को सबक सिखाया था, जो उनकी बस्ती पर बुलडोजर फेरने पर उतारू हो रहे थे। हरियाणा के संघियों की बेसब्र प्रतिक्रिया से भी यही लगता है कि दलित धर्मान्तरण से उन्हें घाव गहरा पहुँचा है।

.....फिर भी कायम है साम्प्रदायिक सद्भाव।

समझौता मामले के षडयंत्र में तो आतंकी मामलों की राष्ट्रीय जांच एजेंसी के मुखिया, एनआइए प्रमुख शरद कुमार और केन्द्रीय गृह मंत्री राजनाथ सिंह ने हाथ मिला लिया है। दोनों मिलकर सरकारी गवाहों को तोड़ने, अभियोजकों पर दबाव डालकर केस कमजोर करने और दोषियों की जमानतें कराने में लगे हैं। वे समझौता काण्ड ही नहीं, संघी आतंकवादियों के विरुद्ध तमाम मामलों को रफा दफा करने की मुहिम चला रहे हैं। इनमें प्रमुख हैं, मालेगांव बम काण्ड, हैदराबाद मक्का मस्जिद काण्ड, अजमेर शरीफ काण्ड। ये सभी लोमहर्षक अपराध 2006-07 के हैं। ध्यान रहे कि भाजपाई व संघी अड़ंगेबाजी के चलते असीमानंद गिरोह का पूरी तरह खुलासा होने में वक्त लगा। **शरद कुमार को इसी सितम्बर में सेवा निवृत्त होना है। जाहिर है उसे सेवा विस्तार या किसी अन्य पद का लालच दिया गया है।**

सवाल है कि ऐसे मामलों में न्यायपालिका क्या कर रही है। यह नंगा नाच क्या उसे दिखायी नहीं दे रहा। पुरानी कहावत है कि समझदार के लिए इशारा ही काफी होता है। **सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश दत्तू को भी इस दिसंबर में ही अवकाश पर जाना है। उन्हें भी सेवा निवृत्ति के बाद कोई न कोई पद चाहिए। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष का पद मई से खाली पड़ा है। यह दत्तू के लिए खाली रखा जा रहा है। क्या उन्हें भी सरकार के पक्ष में चुप रहने की वाजिब कीमत दिखा दी गयी है।**

सवाल है कि पाकिस्तान को आतंकी राज्य कह कर कोसने वाले भारत के लिए अब अंतर्राष्ट्रीय मंचों से पाकिस्तान की बदनीयत को लेकर कुछ बोलना क्या संभव रहेगा? क्या मोदी और राजनाथ सिंह असीमानंद की मदद में वही नहीं कर रहे जो पाकिस्तान हाफिज सईद जैसे मुम्बई हमले के आतंकी को बचने के लिए कर रहा है? इसी तरह भगाना जैसे जातीय उत्पीड़न का चक्र क्या भारत को एक नस्ली चरित्र वाले राज्य के रूप में उपहास का पात्र नहीं बनाता? भारत के योग गुरु और शिखर सभ्यता होने के दावों का फिर क्या हुआ? स्वयं को विश्व स्तर का नेता दिखाने का मोदी का अपना मंसूबा कहां गया?

भूलना नहीं चाहिए कि मोदी ने लोकसभा चुनाव में विकास के नाम पर मतदाता का विश्वास पाया था। वह जमाना था जब राहुल गांधी से भाषण कराना यानी कांग्रेस के लिए अपनी सीटें कटवाना होता था। इतनी जल्दी यही समीकरण नरेंद्र मोदी और भाजपा पर चिपक जायेगा, किसने सोचा था!

ख़बर दार

बड़का झूठा पार्टी-नितीश

भाजपा को मोदी की जुमलेबाज़ी के चलते भारतीय जुमला पार्टी कहा जाने लगा था। उसे बदल कर अब नितीश कुमार ने बड़का झूठा पार्टी कहना शुरू कर दिया है। उनकी चिढ़ इस बात को लेकर है कि मोदी ने उनकी पार्टी जेडीयू को 'जनता का दमन और उत्पीड़न' पार्टी कह कर सम्बोधित किया। देखा जाय तो झूठ बोलने में मोदी ने वास्तव में सभी को पीछे छोड़ दिया है और इस लिहाज से नितीश ने ग़लत नहीं कहा। फ़िर भी 'मज़दूर मोर्चा' ने नितीश का काल्पनिक साक्षात्कार लिया ताकि इन 'झूठों' के साथ उनकी सहयात्रा और अब 'जंगल राज' के उनके नये सहयात्री पर प्रकाश पड़ सके।

म.मो.-नितीश कुमार जी 2005 से 2012 तक साढे सात साल आप इसी बड़का झूठा पार्टी के साथ बिहार में सत्तानशीन रहे। तब सच बोलने की सुध आपको क्यों नहीं आई?

नितीश कुमार-देखिये, बात सच बोलने या न बोलने की नहीं है। बात सत्ता में बने रहने की है। जब मैं भाजपा के साथ सत्ता में था और ये मेरी तारीफ़ करते थे, तब भी बोलते तो झूठ ही थे। लेकिन तब इनका झूठ मुझे रास आता था। आज जब ये मेरे विरोधी बन बैठे हैं तो मुझे इनका सच भी झूठ नज़र आता है।

म.मो.-आप इनको बेहद झूठा पार्टी कह लेते। इन्हें 'बड़का' कहने से क्या आप स्वयं को छोटा नहीं बता रहे?

नितीश-अगर मैं इनको बड़का न कहता तो यह इतना बड़ा झूठ हो जाता कि किसी को भी हजम नहीं होता। मैं और कोई भी दावा कर लूं पर नरेन्द्र मोदी के रहते बड़का होने का दावा तो नहीं कर सकता। उन्होंने जिन आडवाणी का पैर खींच कर प्रधानमंत्री की कुर्सी हथियाई, उन्हें आज भी आदरणीय कहते हैं। जिस पत्नी को चार दशक पहले उसके हाल पर छोड़ दिया, उसे आज भी पत्नी कहते हैं। जिस भ्रष्टाचार और काले धन की बदौलत उनकी सत्ता चल रही है, उन्हें भी मिटाने का दावा करते हैं। मैं क्या कोई इतने बड़े-बड़े झूठ बघारने की हिमाकत नहीं कर सकता।

म.मो.-मोदी ने तो आपके डीएनए को ही झूठा और विश्वासघाती बता दिया। आपने कम्युनिस्टों, सोशलिस्टों, कांग्रेसियों, भाजपाईयों, लालुओं यानी हर तरह के राजनीतिक सत्ता समीकरण से समय-समय पर गोटी बैठाई है। और बारी-बारी से उनका साथ छोड़ कर उन्हें धोखा दिया है। झूठ और फ़रेब इसी को तो कहते हैं।

नितीश-अरे भई मेरे साथ छोड़ने पर न जाओ। यह देखो कि जब तक सत्ता रही मैंने इन सबका साथ दिया। जब सत्ता ही न रहे तो क्या साथ देना और क्या न देना। कोई मुझ पर यह आरोप नहीं लगा सकता कि मैंने आत्मा की आवाज़ या किसी तथाकथित सिद्धान्त के आधार पर किसी का साथ छोड़ा हो।

म.मो.-अच्छा यह तो बता दीजिये कि जंगल राज वाले लालू यादव से आपका गठबंधन कितने दिन चल पायेगा?

नितीश-इस गठबंधन की प्रमुख शर्त तो आपको पता ही होगी। मतलब, जब तक मैं मुख्यमंत्री हूं, गठबंधन चलता रहेगा।

म.मो.-अच्छा यह तो बता दीजिये कि चंदन कुमार कौन है और भुजंग प्रसाद कौन?

नितीश-चंदन कुमार को इससे क्या फ़र्क पड़ता है कि भुजंग प्रसाद कौन है? फ़र्क इससे पड़ता है कि जो भी भुजंग प्रसाद है वह मुख्यमंत्री बनवाने में सहायक है या नहीं।

मां-पिता से पूछो, मौसी से नहीं....

संसद के गए पूरे सत्र में ड्रामे के बीच सुषमा स्वराज ने राहुल से यह तो ठीक ही पूछा कि मां सोनिया से बोफोर्स-क्वात्रोचि संबंधों का पता करना था और पिता राजीव से एंडरसन-शहरयार आदान-प्रदान का। ये दोनों स्कैंडल राजीव की क्लीन छवि पर न छूटने वाले धब्बे थे। लेकिन घोर आश्चर्य कि मौसी सुषमा स्वयं यह क्यों नहीं बता पा रहीं कि काले धन के सबसे चर्चित भगोड़े ललित मोदी की मानवीय, आधार पर गुप्त मदद पहुँचाने के एवज में उनके पति और बेटी को कितनी रकम मिली है। देखा जाय तो सुषमा का तर्क इतना भर है कि कांग्रेस ने गाय का गोबर खाया है तो हमें सुअर की लीद खाने का हक है। सुषमा से यह पूछना भी तो बनता है कि बोफोर्स-क्वात्रोचि के भ्रष्टाचार और एंडरसन.शहरयार के आदान-प्रदान के सम्बन्ध में 1998-2004 तक रही उनकी भाजपा सरकार ने क्या किया। अगर अब भी उन पर व्यक्तिगत रूप से आंच नहीं आती तो अब भी चुप ही रहती। चोर चोर मौसेरे भाई-बहन। वैसे सुषमा से न तो बहस में किसी ने पूछा और न ही उन्होंने खुद बताया कि बोफोर्स-क्वात्रोचि के भ्रष्टाचार और एंडरसन.शहरयार के प्रसंगों के समान ही कुख्यात बेल्लारी; कर्नाटक के अन्तर्राष्ट्रीय खान माफिया रेड्डी बन्धुओं को किसने टिकट दिलाया, किसने मन्त्री बनवाया और किसने उनके अवैध खनन कार्यों को संरक्षण दिया। दरअसल सुषमा की झोली में कंकालों की कमी नहीं है।

सुषमा शायद भूल गयी कि भारत की जनता 1989 चुनाव में राजीव गांधी और कांग्रेस को करारी हार के रूप में सजा दे चुकी है। आज जवाबदेही मोदी और भाजपा की है। सुषमा, विजयराजे सिंधिया, रमन सिंह और शिवराज सिंह चौहान के स्कैंडल सामने आ चुके हैं, समय के साथ और न जाने कितने सामने आयेंगे। भारत की जनता को अगर विश्वास देना आता है तो हाथ खींचना भी।